एम.एच.डी.-24 : मध्यकालीन कविता–2
सत्रीय कार्य
(सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–24
सत्रीय कार्य कोडः एम.एच.डी–24/टी.एम.ए/2022–2023
कुल अंक : 100

1. निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **10× 4 = 40**

(क) गरज आपनी आप सो, रहिमन कही न जाय।
जैसे कुल की कुल बधू, पर घर जात लजाय।।

(ख) दीरघ दरीनि बसैं, केसवदास केसरी ज्यों,
केसरो कों देखि बनकरी ज्यों कंपत हैं।
बासर की सम्पदा उलूक ज्यों न चितवत
चकवा ज्यों चंद चितै चौगुनो चंपत हैं।
केका सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम
घननि की घोरनि जवासे ज्यों तपत हैं।
भौंर ज्यो भंवत बन जोगी ज्यों जगत निसि
साकत ज्यो स्याम नाम तेरोई जपत हैं।

(ग) राई लोन वारति, गुराई देखि अंगन की, दुरै न दुराईयै भुराइ सो भिरति है।
ज्यों ज्यों सुघराई सों न उधरन देति त्यों त्यों सुंदरि सुघर, घर घेरी न घिरति है।।
निठुर डिठौना दीने नीठि निकसन कहै, डीठि लागिबे को डर पीठि दै गिरति है;
जिन जिन ओर, चित चोर चितवति, त्योंही तिन तिन ओर, तिन तोरति फिरति है।।

(घ) प्रीतम आए प्रभात प्रिया–घर, राति रमैं रति–चिह्न लिए हीं।
बैठि रही पलका पर सुंदरि नैन नवायकें, धीर धरें हीं।
बांह गहैं 'मतिराम' कहैं, न रही रिस मानिनी के हठ कें हीं।
बोली न बोल कछू, सतराय कें, भौंह चढ़ाय तकी तिरछौंहीं ।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक का लगभग 500 शब्दों में) दीजिए : **15× 3 = 45**

(i) रहीम की काव्यभाषा पर प्रकाश डालिए।
(ii) मतिराम के काव्य में अभिव्यक्त प्रकृति वर्णन का सोदाहरण विवेचन कीजिए।
(iii) हिंदी आलोचना में 'मतिराम' पर निबंध लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रत्येक विषय पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए : **5× 3 = 15**

(i) रसलीन
(ii) मिश्रबंधु विनोद
(iii) केशवदास का आचार्यत्व